

समन्वय

- I. अपनी सेवकाई से पूर्व मसीह के जीवन का काल।
 - क. लूका की भूमिका और समर्पण (लूका 1:1-4)।
 - ख. यूहन्ना में परिचय (यूहन्ना 1:1-18)।
 - ग. मत्ती में यीशु की वंशावली (मत्ती 1:1-17)।
 - घ. लूका में यीशु की वंशावली (लूका 3:23-38)।
 - ड. यूहन्ना बपतिस्ता देने वाले के जन्म की जकर्याह के पास स्वर्गदूत द्वारा घोषणा (लूका 1:5-25)।
 - च. यीशु के जन्म की मरियम के पास स्वर्गदूत द्वारा घोषणा (1:26-38)।
 - छ. मरियम (यीशु की होने वाली मां) का इलिशबा (यूहन्ना बपतिस्ता देने वाले की होने वाली मां) के पास जाना (लूका 1:39-56)।
 - ज. यूहन्ना बपतिस्ता देने वाले का जन्म और प्रारम्भिक जीवन (लूका 1:57-80)।
 - झ. यीशु के आने की यूसुफ के पास घोषणा (मत्ती 1:18-25)।
 - ञ. यीशु का जन्म (लूका 2:1-7)।
 - ट. चरवाहों के पास यीशु के जन्म की घोषणा (लूका 2:8-20)।
 - ठ. यीशु का खतना और नामकरण; मंदिर में (लूका 2:21-39)।
 - ड. पूर्व से आए ज्योतिषियों ("पण्डितों") का यीशु के दर्शन के लिए आना (मत्ती 2:1-12)।
 - ढ. मिस्र में जाना व बैतलहम में बच्चों का मारा जाना (मत्ती 2:13-18)।
 - ण. बालक यीशु को मिस्र से नासरत में लाया गया (मत्ती 2:19-23; देखें लूका 2:39ख)।
 - त. यीशु का नासरत में रहना; बारह वर्ष की आयु में यरूशलेम में जाना (लूका 2:40-52)।
- II. यूहन्ना बपतिस्ता देने वाले की सेवकाई का आरम्भ।
 - क. यूहन्ना की सेवकाई (मत्ती 3:1-6; मरकुस 1:1-6; लूका 3:1-6)।
 - ख. यूहन्ना का संदेश (मत्ती 3:7-12; मरकुस 1:7, 8; लूका 3:7-18)।
- III. यीशु की सेवकाई का आरम्भ।
 - क. यूहन्ना से यरदन नदी में यीशु का बपतिस्ता (मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-11; लूका 3:21, 22; यूहन्ना 1:31-34)।
 - ख. जंगल में यीशु की परीक्षा हुई (मत्ती 4:1-11; मरकुस 1:12, 13; लूका 4:1-13)।
 - ग. यीशु के विषय में यूहन्ना की गवाही (यूहन्ना 1:19-34)।

- घ. यीशु के प्रारम्भिक चले (यहूदिया में) (यूहन्ना 1:35-51) ।
- ड. यीशु का पहला आश्चर्यकर्म (काना गलील में) (यूहन्ना 2:1-11) ।
- च. कफ़रनहूम में यीशु का पहला ठिकाना (गलील में) (यूहन्ना 2:12) ।
- IV. पहले से दूसरे फसह तक ।
- क. यीशु का सेवकाई का पहला फसह ।
1. मंदिर को शुद्ध करना (यूहन्ना 2:13-25) ।
 2. निकुदेमुस को सिखाना (यूहन्ना 3:1-21) ।
- ख. यहूदिया में प्रथम सेवकाई (और यूहन्ना की और गवाही) (यूहन्ना 3:22-36) ।
- ग. यहूदिया से गलील में जाना ।
1. जाने के कारण (मत्ती 4:12; मरकुस 1:14; लूका 3:19, 20; यूहन्ना 4:1-3) ।
 2. सामरिया की घटना (यूहन्ना 4:4-42) ।
 3. गलील में पहुंचना (लूका 4:14; यूहन्ना 4:43-45) ।
- घ. गलील में यीशु की शिक्षा का एक सामान्य विवरण (मत्ती 4:17; मरकुस 1:14, 15; लूका 4:14, 15) ।
- ड. काना में दूसरा आश्चर्यकर्म (यूहन्ना 4:46-54) ।
- च. कफ़रनहूम से गलील में जाना (मत्ती 4:13-16) ।
- छ. चार मछुआरों को बुलाना (मत्ती 4:18-22; मरकुस 1:16-20; लूका 5:1-11) ।
- ज. कफ़रनहूम में: आराधनालय में दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति को चंगा करना (मरकुस 1:21-28; लूका 4:31-37) ।
- झ. कफ़रनहूम में: पतरस की सास और अन्य लोगों को चंगा करना (मत्ती 8:14-17; मरकुस 1:29-34; लूका 4:38-41) ।
- ञ. गलील में: शिक्षा और चंगाई का यीशु का पहला दौरा (मत्ती 4:23-25; मरकुस 1:35-39; लूका 4:42-44) ।
- ट. गलील में: एक कोढ़ी का चंगा करना-और उसका परिणाम उत्तेजना (मत्ती 8:2-4; मरकुस 1:40-45; लूका 5:12-16) ।
- ठ. कफ़रनहूम में वापस: एक झोले के मारे को चंगा करना (मत्ती 9:2-8; मरकुस 2:1-12; लूका 5:17-26) ।
- ड. कफ़रनहूम के निकट: मत्ती को बुलाहट (मत्ती 9:9; मरकुस 2:13, 14; लूका 5:27, 28) ।
- V. दूसरे से तीसरे फसह तक ।
- क. यीशु ने सब्त के दिन एक लंगड़े को चंगा किया और अपने कार्य का बचाव किया (यूहन्ना 5:1-47) ।

- ख. यीशु ने अपने चेलों का बचाव किया, जिन्होंने सब्त के दिन अनाज तोड़ा था (मत्ती 12:1-8; मरकुस 2:23-28; लूका 6:1-5)।
- ग. यीशु ने सब्त के दिन एक सूखे हाथ वाले आदमी को चंगा करने का समर्थन किया (मत्ती 12:9-14; मरकुस 3:1-6; लूका 6:6-11)।
- घ. यीशु ने गलील सागर के पास बहुत से लोगों को चंगा किया (मत्ती 12:15-21; मरकुस 3:7-12)।
- ड. प्रार्थना के बाद, यीशु ने बारह प्रेरित चुने (मत्ती 10:2-4; मरकुस 3:13-19; लूका 6:12-16)।
- च. पहाड़ी उपदेश।
1. प्रारम्भिक कथन (मत्ती 5:1, 2; लूका 6:17-20)।
 2. धन्य वचन: मसीहा के लोगों की प्रतिज्ञाएं (मत्ती 5:3-12; लूका 6:20-26)।
 3. मसीहा के लोगों का प्रभाव (और ज़िम्मेदारियां) (मत्ती 5:13-16)।
 4. मसीहा की शिक्षा का पुराने नियम से और पुराने नियम की शिक्षा पर मनुष्यों द्वारा बनाई परम्पराओं से सम्बन्ध (मत्ती 5:17-48; लूका 6:27-30, 32-36)।
 5. धार्मिक कार्य अन्दर से हों, न कि दिखावे के लिए (मत्ती 6:1-18)।
 6. सांसारिक चिंताओं के विपरीत स्वर्गीय भंडार सुरक्षित (मत्ती 6:19-34)।
 7. दोष लगाने पर शिक्षा (मत्ती 7:1-6; लूका 6:37-42)।
 8. प्रार्थना पर शिक्षा (मत्ती 7:7-11)।
 9. सुनहरी नियम (मत्ती 7:12; लूका 6:31)।
 10. दो मार्ग-और झूठे भविष्यवक्ता (मत्ती 7:13-23; लूका 6:43-45)।
 11. निष्कर्ष और प्रासंगिकता (दो मकान बनाने वाले) (मत्ती 7:24-29; लूका 6:46-49)।
- छ. एक सूबेदार के सेवक को चंगा किया गया (मत्ती 8:1, 5-13; लूका 7:1-10)।
- ज. एक विधवा का पुत्र जिलाया गया (लूका 7:11-17)।
- झ. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को उत्तर दिया गया (मत्ती 11:2-30; लूका 7:18-35)।
- ञ. यीशु के पांव का अभिषेक किया गया (लूका 7:36-50)।
- ट. गलील का दूसरा दौरा (लूका 8:1-3)।
- ठ. परमेश्वर की निंदा के आरोप (मत्ती 12:22-37; मरकुस 3:20-30; लूका 11:14-23)।
- ड. चिह्न ढूंढने वाले (मत्ती 12:38-45; लूका 11:16, 24-26, 29-36)।
- ढ. यीशु का परिवार (मत्ती 12:46-50; मरकुस 3:31-35; लूका 8:19-21; 11:27,

28)।

ण. दृष्टांतों का पहला बड़ा समूह।

1. अवसर व स्थिति (मत्ती 13:1-3; मरकुस 4:1, 2; लूका 8:4)।
2. बीज बोने वाले का दृष्टांत-और उसकी व्याख्या (मत्ती 13:3-23; मरकुस 4:3-25; लूका 8:5-18)।
3. उगने वाले बीज का दृष्टांत (मत्ती 4:26-29)।
4. जंगली बीज का दृष्टांत (मत्ती 13:24-30)।
5. राई के बीज और खमीर के दृष्टांत (मत्ती 13:31-35; मरकुस 4:30-34)।
6. जंगली बीज के दृष्टांत की व्याख्या (मत्ती 13:36-43)।
7. खजाने और मोती के दृष्टांत (मत्ती 13:44-46)।
8. जाल का दृष्टांत (मत्ती 13:47-53)।

त. तूफान को शान्त करना (मत्ती 8:18, 23-27; मरकुस 4:35-41; लूका 8:22-25)।

थ. दुष्टात्मा से ग्रस्त दो लोगों को चंगा करना (मत्ती 8:28-34; 9:1; मरकुस 5:1-21; लूका 8:26-40)।

द. पापियों के साथ खाना (और उपवास पर सन्देश) (मत्ती 9:10-17; मरकुस 2:15-22; लूका 5:29-39)।

ध. याईर की बेटी को जिलाना (और लहू बहने के रोग वाली स्त्री को चंगा करना) (मत्ती 9:18-26; मरकुस 5:22-43; लूका 8:41-56)।

न. अन्धों को और एक दुष्टात्मा से ग्रस्त आदमी को चंगा करना (और आलोचना सहना) (मत्ती 9:27-34)।

प. नासरत में जाना (और ठुकराए जाना) (मत्ती 13:54-58; मरकुस 6:1-6; लूका 4:16-31)।

फ. गलील का यीशु का तीसरा दौरा (और बारह को निर्देश) (मत्ती 9:35-38; 10:1-42; 11:1; मरकुस 6:6-13; लूका 9:1-6)।

ब. यीशु में हेरोदेस की दिलचस्पी (और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु का विवरण) (मत्ती 14:1-12क; मरकुस 6:14-29; लूका 9:7-9)।

भ. यीशु का हेरोदेस के इलाके से निकलना (और वापस आना)।

1. बारह का लौटना और गलील सागर के पूर्वी तट की ओर जाना (मत्ती 14:12ख, 13; मरकुस 6:30-32; लूका 9:10; यूहन्ना 6:1)।
2. पांच हजार पुरुषों को खिलाना (मत्ती 14:13-21; मरकुस 6:33-44; लूका 9:11-17; यूहन्ना 6:2-14)।
3. पानी पर चलना (मत्ती 14:22-36; मरकुस 6:45-56; यूहन्ना 6:15-21क)।

- म. जीवन की रोटी पर यीशु का सन्देश (और पतरस का अंगीकार) (यूहन्ना 6:21ख-71) ।
- VI. तीसरे फसह से यीशु के बैतनिय्याह में आने तक।
- क. तीसरा फसह (देखें यूहन्ना 6:4; 7:1) ।
- ख. परम्परा का पालन न करने का दोष लगना (मत्ती 15:1-20; मरकुस 7:1-23) ।
- ग. हेरोदेस के इलाके से निकलना (मत्ती 15:21; मरकुस 7:24) ।
- घ. फिनीके (या कनानी जाति) की स्त्री की लड़की को चंगा करना (मत्ती 15:22-28; मरकुस 7:25-30) ।
- ड. हेरोदेस के इलाके से दूर रहना (मत्ती 15:29; मरकुस 7:31) ।
- च. एक गूंगे समेत बहुत से लोगों को चंगा करना (मत्ती 15:30, 31; मरकुस 7:32-37) ।
- छ. चार हज़ार लोगों को खिलाना (मत्ती 15:32-39क; मरकुस 8:1-9) ।
- ज. हेरोदेस के इलाके से एक और बार निकलना ।
1. गलील में: यीशु के शत्रुओं द्वारा एक और आक्रमण-उसके बाद एक और बार निकलना (मत्ती 15:39ख-16:12; मरकुस 8:10-21) ।
 2. बैतसैदा में: एक अन्धा चंगा किया गया (मरकुस 8:22-26) ।
 3. कैसरिया फिलिप्पी के निकट: अच्छा अंगीकार (मत्ती 16:13-20; मरकुस 8:27-30; लूका 9:18-21) ।
 4. कैसरिया फिलिप्पी के निकट: यीशु की मृत्यु की भविष्यवाणी (मत्ती 16:21-28; मरकुस 8:31-38; लूका 9:22-27) ।
 5. कैसरिया फिलिप्पी के निकट (हर्मोन पर्वत पर?): रूपांतरण (मत्ती 17:1-13; मरकुस 9:2-13; लूका 9:28-36) ।
 6. दुष्टात्मा से ग्रस्त एक लड़के को चंगा करना (मत्ती 17:14-21; मरकुस 9:14-29; लूका 9:37-43) ।
 7. गलील में वापसी पर (यीशु की मृत्यु की फिर भविष्यवाणी) (मत्ती 17:22, 23; मरकुस 9:30-32; लूका 9:43-45) ।
- झ. मन्दिर का कर देने पर प्रश्न (मत्ती 17:24-27) ।
- ञ. बच्चों की तरह होने की आवश्यकता पर शिक्षा (मत्ती 18:1-14; मरकुस 9:33-50; लूका 9:46-50) ।
- ट. गलील में अन्तिम शिक्षा: भाइयों के बीच समस्याएं (मत्ती 18:15-35) ।
- ठ. सेवकाई बदलकर यहूदिया में जाती है (यूहन्ना 7:1; मत्ती 19:1) ।
1. यीशु को उसके भाइयों द्वारा झोंपड़ियों के पर्व में जाने का आग्रह (यूहन्ना 7:2-9) ।
 2. यीशु का चुपके से यरूशलेम में जाना (लूका 9:51-56; यूहन्ना 7:10) ।

3. मार्ग में: चले बनने पर शिक्षा (लूका. 9:57-62; देखें मत्ती 8:19-22)।
- ड. यरूशलेम में: झोंपड़ियों का पर्व।
 1. पर्व में: मन्दिर में शिक्षा देना (यूहन्ना 7:11-36)।
 2. पर्व के अंतिम दिन: जीवन के जल पर शिक्षा (यूहन्ना 7:37-52)।
 3. पर्व के बाद: अतिरिक्त शिक्षा।
 - क. व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री (यूहन्ना 7:53-8:11)।
 - ख. ज्योति और अंधकार पर शिक्षा (यूहन्ना 8:12-59)।
 - ग. शारीरिक और आत्मिक अंधकार पर शिक्षा (यूहन्ना 9:1-41)।
 - घ. अच्छे चरवाहे और मजदूरों पर शिक्षा (यूहन्ना 10:1-21)।
- ढ. बाद में यहूदिया की सेवकाई।
 1. यीशु और सत्तर चले (लूका 10:1-24)।
 2. यीशु और एक व्यवस्थापक (दयालु सामरी का दृष्टांत) (लूका 10:25-37)।
 3. यीशु, मरियम, और मारथा (लूका 10:38-42)।
 4. यीशु और उसके चले (प्रार्थना पर शिक्षा) (लूका 11:1-13)।
 5. यीशु और एक फरीसी (लूका 11:37-54)।
 6. यीशु और लोगों की भीड़ (देखें लूका 12:1, 13, 54; 13:1)।
 - क. कपट पर शिक्षा (लूका 12:1-12)।
 - ख. भौतिकवाद पर शिक्षा (लूका 12:13-34)।
 - ग. चौकसी पर शिक्षा (लूका 12:35-48)।
 - घ. आ पहुंची त्रासदी पर शिक्षा (लूका 12:49-59)।
 - ड. मन फिराव पर शिक्षा (लूका 13:1-9)।
 7. यीशु और एक रोगी स्त्री (सब्त का विवाद) (लूका 13:10-21)।
- त. स्थापन का पर्व (लूका 13:22; यूहन्ना 10:22)।
 1. उसके शत्रुओं के साथ झगड़ा जारी (यूहन्ना 10:23-30)।
 2. उसे मारने के प्रयास जारी (यूहन्ना 10:31-39)।
- थ. पिरिया में सेवकाई।
 1. यीशु की सेवकाई “यरदन के पार” (मत्ती 19:1, 2; मरकुस 10:1; यूहन्ना 10:40-42)।
 2. यीशु से पूछताछ और चेतावनी (लूका. 13:23-35)।
 3. यीशु को एक फरीसी के घर बुलाया जाना और पर्वों पर तीन उपयुक्त सबक (लूका 14:1-24)।
 - क. विनम्रता पर एक सबक (लूका 14:7-11)।
 - ख. निःस्वार्थपन पर एक सबक (लूका 14:12-14)।
 - ग. बड़ी दावत का दृष्टांत (लूका 14:16-24)।

4. यीशु के पीछे लोगों की भीड़ और एक महत्वपूर्ण सबक (लूका 14:25-35)।
 5. चुंगी लेने वालों और पापियों का यीशु के पीछे आना और तीन हृदयस्पर्शी कहानियाँ, जिनसे एक सबक मिलता है (लूका 15:1-32):
 - क. खोई हुई भेड़ का दृष्टांत (लूका 15:3-7)।
 - ख. खोए हुए सिक्के का दृष्टांत (लूका 15:8-10)।
 - ग. खोए हुए लड़के का दृष्टांत (लूका 15:11-32)।
 6. यीशु अपने चेलों के साथ और अधर्मी भण्डारी के दृष्टांत में एक महत्वपूर्ण सबक (लूका 16:1-13)।
 7. यीशु की फरीसियों द्वारा निगरानी और धनी आदमी और लाज़र के “दृष्टांत” में एक गम्भीर सबक (लूका 16:14-31)।
 8. फुटकर शिक्षा (लूका 17:1-10)।
- द. बैतनिय्याह में।
1. लाज़र को जिलाना (यूहन्ना 11:1-46)।
 2. महासभा का आदेश (यूहन्ना 11:47-53)।
- ध. पलिश्तीन की अन्तिम यात्रा।
1. इफ्राइम में जाना (यूहन्ना 11:54)।
 2. सामरिया और गलील में से होकर (लूका 17:11ख)।
- न. यरूशलेम की अन्तिम यात्रा (लूका 17:11क)।
1. दस कोढ़ियों को चंगा करना (लूका 17:12-19)।
 2. राज्य पर शिक्षा (लूका 17:20-37)।
 3. प्रार्थना पर दृष्टांत
 - क. हठी विधवा का दृष्टांत (लूका 18:1-8)।
 - ख. फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत (लूका 18:9-14)।
 4. तलाक पर सवाल-और विवाह पर शिक्षा (मत्ती 19:3-12; मरकुस 10:2-12)।
 5. बच्चों के विषय में गलतफहमी और बच्चों की तरह होने पर शिक्षा (मत्ती 19:13-15; मरकुस 10:13-16; लूका 18:15-17)।
 6. अनन्त जीवन के विषय में प्रश्न-और धन पर शिक्षा (जवान धनी अधिकारी की कहानी) (मत्ती 19:16-26; मत्ती 10:17-27; लूका 18:18-27)।
 7. प्रतिफल पर एक प्रश्न-और दाख की बारी में मजदूरों के दृष्टांत समेत (मत्ती 20:1-16) परमेश्वर की आशिषों पर शिक्षा (मत्ती 19:27-30; मरकुस 10:28-31; लूका 18:28-30)।
 8. अपनी मृत्यु के आने की अपने चेलों को पहले से चेतावनी (मत्ती

20:17-19; मरकुस 10:32-34; लूका 18:31-34)।

9. सेवक होने पर अपने चेलों को शिक्षा (मत्ती 20:20-28; मरकुस 10:35-45)।
10. बरतिमाई और उसके साथी को अंधेपन से चंगाई देना (मत्ती 20:29-34; मरकुस 10:46-52; लूका. 18:35-43)।
11. जक्कई को लोभ से बचाना (लूका 19:1-10)।
12. अपने चेलों को सुधारना-मोहरों का दृष्टांत (लूका 19:11-27)।

VII. यीशु की सेवकाई का अन्तिम सप्ताह।

- क. शुक्रवार दोपहर: बैतनिय्याह में पहुंचना (यूहन्ना 11:55-12:1)।
- ख. शनिवार सायं: बैतनिय्याह में एक दावत (मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:3-9; यूहन्ना 12:2-11)।
- ग. रविवार दोपहर: यरूशलेम में विजयी प्रवेश (मत्ती 21:1-11; मरकुस 11:1-11; लूका 19:29-44; यूहन्ना 12:12-19)।
- घ. सोमवार: अंजीर के एक पेड़ को श्राप देना, मन्दिर को शुद्ध करना, और अन्धे और लंगड़े को चंगा करना (मत्ती 21:12-19; मरकुस 11:12-19; लूका 19:45-48; 21:37, 38)।
- ड. मंगलवार: “प्रश्नों का बड़ा दिन।”
 1. परिचय: सूखा हुआ अंजीर का पेड़ (मत्ती 21:20-22; मरकुस 11:20-26)।
 2. अधिकार पर प्रश्न:
 - क. प्रश्न और यीशु का उत्तर (मत्ती 21:23-27; मरकुस 11:27-33; लूका 20:1-8)।
 - ख. उसके उत्तर का भाग: तीन दृष्टांत
 - (1) दो पुत्रों का दृष्टांत (मत्ती 21:28-32)।
 - (2) दुष्ट किसानों का दृष्टांत (मत्ती 21:33-46; मरकुस 12:1-12; लूका 20:9-19)।
 - (3) राजा के पुत्र के विवाह के भोज का दृष्टांत (मत्ती 22:1-14)।
 3. एक के बाद एक प्रश्न:
 - क. फरीसी और हेरोदेसी कर देने सम्बन्धी प्रश्न पूछते हैं (मत्ती 22:15-22; मरकुस 12:13-17; लूका 20:20-26)।
 - ख. सद्दूकी पुनरुत्थान के विषय पर पूछते हैं (मत्ती 22:23-33; मरकुस 12:18-27; लूका 20:27-39)।
 - ग. एक व्यवस्थापक सबसे बड़ी आज्ञा के बारे में पूछता है (मत्ती 22:34-40; मरकुस 12:28-34; लूका 20:40)।

- घ. यीशु “मसीह” के विषय में पूछता है (मत्ती 22:41-46; मरकुस 12:35-37; लूका. 20:41-44) ।
4. ग्रन्थियों और फरीसियों की यीशु द्वारा भर्त्सना (मत्ती 23:1-39; मरकुस 12:38-40; लूका 20:45-47) ।
5. विधवा का दान (मरकुस 12:41-44; लूका 21:1-4) ।
6. भीड़ को संदेश
- क. अन्यजाति यीशु को ढूंढते हैं (यूहन्ना 12:20-22) ।
- ख. यीशु की आने वाली मृत्यु-यहूदियों व अन्यजातियों दोनों के लिए (यूहन्ना 12:23-36) ।
- ग. यहूदियों द्वारा यीशु का ठुकराया गया (यूहन्ना 12:37-50) ।
7. यरूशलेम के विनाश और द्वितीय आगमन पर प्रेरितों को संदेश
- क. टिप्पणियां और प्रश्न (मत्ती 24:1-3; मरकुस 13:1-4; लूका 21:5-7) ।
- ख. यरूशलेम के विनाश पर शिक्षा
- (1) यरूशलेम के विनाश से असम्बद्ध घटनाएं (मत्ती 24:4-14; मरकुस 13:5-15; लूका 21:8-19) ।
- (2) यरूशलेम के विनाश से जुड़ी घटनाएं (मत्ती 24:15-35; मरकुस 13:14-31; लूका 21:20-36) ।
- ग. द्वितीय आगमन पर शिक्षा
- (1) सामान्य शिक्षा
- (क) बिना घोषणा के द्वितीय आगमन (मत्ती 24:36-41; मरकुस 13:32) ।
- (ख) तैयार रहने की आवश्यकता (मत्ती 24:42-51; मरकुस 13:33-37) ।